Date - 30/6/20

Name - Raj Kapoor verma

college name - shakuntalam Institute of teachers education At - Krihindi Kumhu station Sasaram.

Class - B.Ed 1st year

paper - C-2 unit - 5

Q मूल्यांकन प्रक्रिया पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 की अनुशंसाएँ और मूल्यांकन के कार्य।

उ "मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इससे छात्र की अध्ययन की आदतों तथा शिक्षकों की अध्यापन - विधि पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। मूल्यांकन प्रविधियाँ प्रामाणिक वांछित दिशाओं में छात्र के विकास के सम्बन्ध में प्रमाण संग्रहित करने के साधन है। अतः ये प्रविधियाँ प्रामाणिक विश्वसनीय वस्तुनिष्ठ एवं व्यावहारिक हों।

भारत में मूल्यांकन के लिए लिखित परीक्षा को ही महत्व दिया जाता है। इनमें बहुत से दोष हैं। अतः इनको सुधारने तथा मूल्यांकन के कार्यक्रम को व्यापक बनाने के लिए आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दिए है -

1. परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता के लिए परीक्षक की ईमानदारी

Q मूल्यांकन प्रक्रिया पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 की अनुशंसाएँ और मूल्यांकन के कार्य।

उ "मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इससे छात्र की अध्ययन की आदतों तथा शिक्षकों की अध्यापन - विधि पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। मूल्यांकन प्रविधियाँ प्रामाणिक वांछित दिशाओं में छात्र के विकास के सम्बन्ध में प्रमाण संग्रहित करने के साधन है। अतः ये प्रविधियाँ प्रामाणिक विश्वसनीय वस्तुनिष्ठ एवं व्यावहारिक हों।

भारत में मूल्यांकन के लिए लिखित परीक्षा को ही महत्व दिया जाता है। इनमें बहुत से दोष हैं। अतः इनको सुधारने तथा मूल्यांकन के कार्यक्रम को व्यापक बनाने के लिए आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दिए है -

1. परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता के लिए परीक्षक की ईमानदारी

2

बहुत महत्वपूर्ण है। यह विश्वसनीयता परीक्षाओं के खुलेपन से कायम की जा सकती है। यह बात माननी पड़ेगी कि छात्रों का यह हक है कि वे अपनी उत्तर - पुस्तिकाओं और उनके मूल्यांकन की जाँच कर सकें तथा दूसरे छात्रों की उत्तर - पुस्तिकाओं के साथ उनका मिलान कर सकें।

2. समग्र रूप से डिवीजनों तथा पास/फेल के रूप में परिणाम घोषित करने की प्रथा की समीक्षा की जाय और उनके स्थान पर अलग - अलग प्रत्येक विषय में अंकों / ग्रेडों के अनुसार परिणामों की घोषणा की प्रणाली प्रारम्भ की जाय।

3. छात्रों को यह अवसर प्रदान किया जाय कि वे अनुवर्ती परीक्षाओं के माध्यम से अपने ग्रेडों में सुधार कर सकें।

4. ग्रेडों का निर्धारण करने में विभिन्न विषयों को जो एक - दूसरे के समान नहीं है अंकों को मापने की प्रथा अपनायी जाय।

5. प्रश्न-पत्र तैयार करने वाले व्यक्तियों के लिए सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किये जायें।

6. प्रश्न-पत्र तैयार करने वाले व्यक्तियों की सहायता के लिए प्रश्न-बैंक तैयार किये जायें।

7. शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा अनुकूलन के कार्यक्रमों में नवीन मूल्यांकन प्रणालियों प्रश्न-पत्र तैयार करने कार्य-निष्पादन के मापन आदि पर विशेष ध्यान दिया जाय।

8. निरन्तर (सतत) संस्थागत मूल्यांकन को सुविधाजनक बनाने के प्रयोजन के लिए छात्रों का रिकार्ड रखने के लिए स्कूल तथा कालेजों में सुविधाएँ जुटायी जायें।

9. परीक्षा में सुधार के साथ-साथ शिक्षण सामग्री और शिक्षण विधि में भी सुधार ये उद्देश्य बाह्य परीक्षाओं और शिक्षा-संस्थाओं के अंदर के मूल्यांकन दोनों के लिए प्रासंगिक है।

मूल्यांकन के कार्य

मूल्यांकन के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं –

1. पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन करना।
2. परीक्षा प्रणाली में सुधार करना।
3. निर्देशन एवं परामर्श हेतु उचित अवसर प्रदान करना।
4. बालकों के व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों की जाँच करना।
5. अध्यापकों की कार्य कुशलता एवं सफलता का मापन करना।
6. बालकों की दुर्बलताओं तथा योग्यताओं की जानकारी प्रदान करने में सहायता देना।
7. अनुदेशन की प्रभावशीलता का पता लगाना।
8. बालकों का विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण करना।
9. प्रचलित प्रशिक्षण विधियों तथा पाठ्य-पुस्तकों की जाँच करके उनमें अपेक्षित सुधार करना।

DOMS Page No.
Date / /

5

10. बालकों की अधिगम कठिनाइयों का पता लगाना।

11. बालकों की व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जानकारी प्रदान करना।

12. बालकों को उत्तम ढंग से सीखने के लिए प्रोत्साहित करना।

13. शिक्षण - व्यूह रचना (Teaching Strategy) में सुधार एवं विकास करना।

अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मूल्यांकन का महत्वपूर्ण कार्य बालकों के सर्वांगीण विकास को अधिकतम गतिशील बनाए रखना है।